



शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मि समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)

3049-2890 (Print)

IIFS Impact Factor-4.0

Vol.-3; issue-2 (April-June) 2026

Page No- 297-302

©2026 Shodhaamrit

DOI : 10.71037/Shodhaamrit.v3i2.43

<https://shodhaamrit.gyanvividha.com>

Author's :

डॉ. देवेन्द्र सिंह राजपूत

सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़

Corresponding Author :

डॉ. देवेन्द्र सिंह राजपूत

सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़

भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा की समकालीन प्रासंगिकता : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में दार्शनिक एवं शैक्षिक विमर्श

सारांश : भारतीय ज्ञान परंपरा वैदिक काल में श्रुति पद्धति में प्रवाहित होने के कारण यहां गुरु-शिष्य परंपरा पुष्पित एवं पल्लवित हुई। यहां गुरु का स्थान ज्ञान-प्रदाता, जीवन के समग्र विकास के पथ-प्रदर्शक, संस्कारों के आधानकर्ता, व्यक्तित्व-निर्माता तथा आत्मबोध के प्रेरक के रूप में रहा है। वैदिक काल से लेकर उपनिषद्, महाभारत, भगवद्गीता, स्मृतियों तथा आचार-साहित्य तक गुरु को ब्रह्मविद्या के संवाहक एवं धर्म, ज्ञान तथा संस्कृति के संरक्षक के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। दूसरी ओर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था को भारतीय ज्ञानपरम्परा, नैतिक मूल्यों, समग्र विकास तथा शिक्षक-केंद्रित शैक्षिक दृष्टि के आधार पर पुनर्संरचित करने का प्रयास करती है। नीति के अध्याय-5 में स्पष्ट कहा गया है कि *"Teachers truly shape the future of our children and, therefore, the future of our nation."* इसी प्रकार नीति भारतीय ज्ञान-प्रणाली, मातृभाषा, नैतिक शिक्षा तथा शिक्षक की व्यावसायिक स्वायत्तता को शिक्षा के मूलाधार के रूप में स्वीकार करती है।

प्रस्तुत शोधपत्र में संस्कृत वाङ्मय में अविरल प्रवाहित भारतीय ज्ञान की धारा के आधार पर गुरु-शिष्य परम्परा की वर्तमान उपादेयता तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आधिकारिक प्रारूप के आधार पर गुरु-तत्त्व का दार्शनिक एवं शैक्षिक विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है।

कुंजी शब्द : गुरु, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, भारतीय संस्कृति, भारतीय ज्ञानपरम्परा, शिक्षक, समग्र शिक्षा, मूल्य शिक्षा।

1. भूमिका : भारतीय ज्ञान की सतत सरिता वैदिक काल से प्रवाहित हो रही है जिसमें ऋषियों के द्वारा अपने अनुभव से आत्मसाक्षात्कार किए गए ज्ञान को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे गुरु अपने शिष्य को सम्प्रेषित करते आए हैं। गुरु-शिष्य परम्परा भारतीय संस्कृति का प्राण तत्त्व रहा है जहां गुरु अपने शिष्य को ज्ञान का सम्प्रेषण कर उसके भौतिक एवं आध्यात्मिक जीवन को सफल बनाता है। भारतीय परंपरा में गुरु का

दायित्व न केवल शिक्षित करना या ज्ञान को अगली पीढ़ी को प्रदान करना था, अपितु वह समाज का नैतिक नेतृत्वकर्ता, संस्कृति का संवाहक तथा आध्यात्मिक चेतना का निर्माता था। भारतीय दृष्टि में शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास रहा है। यही कारण है कि उपनिषदों में शिक्षा को आत्मविद्या तथा गुरु को ब्रह्मविद्या का माध्यम माना गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी इसी भारतीय दृष्टिकोण को पुनः प्रतिष्ठित करने का प्रयास करती है। एन.ई.पी. में स्पष्ट कहा गया है कि भारत की शिक्षा व्यवस्था को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हुए वैश्विक उत्कृष्टता प्राप्त करनी चाहिए। भारतीय भाषाओं, भारतीय ज्ञान प्रणाली, नैतिक मूल्यों, योग, कला तथा अनुभवात्मक अधिगम को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया गया है।

बदलते वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा-व्यवस्था के समक्ष अनेक चुनौतियां हैं जिनमें व्यावसायीकरण, मूल्यहीनता, जीवन दृष्टि का अभाव, परीक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण तथा शिक्षक के सामाजिक सम्मान में कमी इत्यादि प्रमुख हैं। ऐसे समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 शिक्षक को पुनः शिक्षा व्यवस्था के केन्द्र में स्थापित करती है। नीति के अनुसार शिक्षक केवल पाठ पढ़ाने वाला कर्मचारी नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माता, नवाचार का प्रेरक तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास का मार्गदर्शक है।

अतः यह अध्ययन भारतीय ज्ञानपरम्परा में प्रतिपादित गुरु-तत्त्व तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में वर्णित शिक्षक की भूमिका के तुलनात्मक विश्लेषण का प्रयास है।

2. भारतीय संस्कृति में गुरु-तत्त्व की दार्शनिक अवधारणा : स्कन्दपुराण में गुरु शब्द का बताया गया है 'गु' शब्द का अर्थ है 'अंधकार' तथा 'रु' शब्द का अर्थ है 'तेज प्रकाश'। अतः गुरु वह है जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। अज्ञान को समाप्त कर ज्ञान का मार्ग दिखाने वाला 'गुरु' कहलाता है। गुरु शब्द का प्रथम वर्ण 'गु' माया इत्यादि गुणों को प्रकट करने वाला है एवं द्वितीय वर्ण 'रु' ब्रह्म का द्योतक है, जो माया की भ्रान्ति का विनाश करने वाला है। मुण्डकोपनिषद् के अनुसार विद्या अर्थात् ज्ञान गुरु द्वारा शिष्य को परम्परा से सम्प्रेषित की जाती है।

भारतीय दर्शन में "गुरु" शब्द अत्यन्त व्यापक अर्थ रखता है। पारम्परिक व्युत्पत्ति के अनुसार—

गुकारस्त्वन्धकारः स्यात् रुकारस्तन्निरोधकः।

अन्धकारनिरोधित्वात् गुरुरित्यभिधीयते॥

अर्थात् 'गु' अज्ञानरूपी अन्धकार तथा 'रु' उसके नाश का प्रतीक है; जो अज्ञान का निवारण करे वही गुरु है। (यह व्युत्पत्ति गुरुगीता में प्रसिद्ध है।)

भारतीय संस्कृति में गुरु का कार्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि ज्ञान, विवेक तथा आत्मानुभूति का विकास करना है। ऋग्वेद में ज्ञान को प्रकाश तथा अज्ञान को अन्धकार कहा गया है। उपनिषदों में गुरु वह है जो शिष्य को आत्मतत्त्व का बोध कराता है -

तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् ।

समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्॥ (मुण्डकोपनिषद्, 1.2.12)

अर्थात् ब्रह्मविद्या की प्राप्ति के लिए शिष्य को ऐसे गुरु के पास जाना चाहिए जो शास्त्रों का ज्ञाता तथा ब्रह्मनिष्ठ हो। यहाँ गुरु के दो अनिवार्य गुण बताए गए हैं—

1. **श्रोत्रिय** — शास्त्रों का प्रामाणिक ज्ञाता।
2. **ब्रह्मनिष्ठ** — ज्ञान को जीवन में चरितार्थ करने वाला।

वर्तमान सन्दर्भ में यही आदर्श शिक्षक की शैक्षणिक दक्षता एवं नैतिक नेतृत्व का आधार बनता है।

2.1. उपनिषदिक चिंतन में गुरु-तत्त्व : तैत्तिरीयोपनिषद् के दीक्षान्त उपदेश में गुरु अपने शिष्य को जीवन के आदर्श प्रदान करता है— सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः॥

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव॥

(तैत्तिरीयोपनिषद्, शीक्षावल्ली, एकादशोऽनुवाक)

यहाँ आचार्य को देवतुल्य स्वीकार किया गया है। इसका अभिप्राय किसी व्यक्ति-पूजा से नहीं, बल्कि उस ज्ञान-परम्परा के सम्मान से है जिसके माध्यम से व्यक्ति का बौद्धिक एवं नैतिक निर्माण होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी शिक्षक को केवल पाठ्यक्रम पूर्ण करने वाला व्यक्ति न मानकर विद्यार्थियों के समग्र विकास का मार्गदर्शक स्वीकार करती है। शिक्षक के व्यावसायिक विकास, प्रशिक्षण, स्वायत्तता तथा सम्मान पर विशेष बल दिया गया है।

2. 2. श्रीमद्भगवद्गीता में विवेचित गुरु की महत्ता : भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं—

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।

उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥ (भगवद्गीता, 4.34)

इस श्लोक में शिक्षा के तीन आधार बताए गए हैं - प्रणिपात (विनम्रता), परिप्रश्न (जिज्ञासा), सेवा (समर्पण) और गुरु के दो गुण - ज्ञान एवं परमतत्त्व का दर्शन बताए गए हैं।

2.3. महाभारत में गुरु-तत्त्व : ज्ञान, धर्म और चरित्र का समन्वय : महाभारत भारतीय संस्कृति का केवल ऐतिहासिक महाकाव्य नहीं, बल्कि शिक्षा-दर्शन का भी महत्त्वपूर्ण स्रोत है। इसमें गुरु को केवल शास्त्र का अध्यापक नहीं, बल्कि धर्म, नीति, आत्मसंयम तथा लोकमंगल का मार्गदर्शक माना गया है। द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, व्यास, परशुराम, भीष्म तथा श्रीकृष्ण जैसे गुरु विभिन्न स्तरों पर शिक्षा के विविध आयामों का प्रतिनिधित्व करते हैं। महाभारत का यह दृष्टिकोण राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के उस विचार से पूर्णतः साम्य रखता है जिसमें शिक्षक को राष्ट्र के भविष्य का निर्माता कहा गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी कहा गया है - "Teachers truly shape the future of our children and, therefore, the future of our nation." (National Education Policy, 2020, Chapter 5)

यह कथन भारतीय गुरु-परम्परा के उसी आदर्श का आधुनिक पुनर्पाठ है जिसमें गुरु समाज के सांस्कृतिक, नैतिक एवं बौद्धिक नेतृत्व का केन्द्र होता है।

2.4. मनुस्मृति में गुरु का स्थान : मनुस्मृति शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि आचार-निर्माण की प्रक्रिया मानती है। इसलिए गुरु के प्रति श्रद्धा एवं अनुशासन को विद्यार्थी का प्रथम धर्म माना गया है।

आचार्यः ब्रह्मणो मूर्तिः पिता मूर्तिः प्रजापतेः।

माता पृथिव्याः मूर्तिस्तु भ्राता स्वमूर्तिरात्मनः॥ (मनुस्मृति, 2.226)

अर्थात् आचार्य ब्रह्मस्वरूप, पिता प्रजापति के समान तथा माता पृथ्वी के समान पूजनीय है।

नाभिव्याहरयेद् ब्रह्म स्वाध्यायं गुरुसन्निधौ। (मनुस्मृति, 2.192)

अर्थात् गुरु के प्रति विनय, अनुशासन एवं मर्यादा शिक्षा का आवश्यक अंग है।

यहाँ शिक्षा का केन्द्र चरित्र है, न कि केवल पढ़ाना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी इसी सिद्धान्त को स्वीकार करती है। नीति में स्पष्ट कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक विकास नहीं, बल्कि नैतिक, संवैधानिक, मानवीय एवं जीवन मूल्यों का विकास भी है।

3. भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा : संवाद, अनुभव और आत्मविकास : भारतीय शिक्षा-पद्धति की सबसे विशिष्ट विशेषता गुरु-शिष्य संवाद है। उपनिषदों में अधिकांश ज्ञान प्रश्नोत्तर के माध्यम से दिया गया है। नचिकेता-यम

संवाद, श्वेतकेतु-उद्दालक संवाद, जनक-याज्ञवल्क्य संवाद तथा गार्गी-याज्ञवल्क्य संवाद इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

यहां शिक्षा केवल दार्शनिक सिद्धान्त नहीं, बल्कि अनुभवजन्य अधिगम (Experiential Learning) का उत्कृष्ट उदाहरण है। गुरु विद्यार्थी को स्वयं सत्य का अनुभव कराने का प्रयास करता है।

इसी प्रकार कठोपनिषद् में नचिकेता प्रश्न पूछने से नहीं डरता। यह भारतीय शिक्षा में **Critical Thinking** तथा **Inquiry-based Learning** की प्राचीन परम्परा का प्रमाण है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी इसी प्रकार -

- Inquiry-based Learning
- Discussion-based Learning
- Experiential Learning
- Discovery-based Learning
- Critical Thinking

को विद्यालय एवं विश्वविद्यालय शिक्षा का आधार मानती है।

अतः यह कहना समीचीन होगा कि आधुनिक शिक्षा में जिन सिद्धान्तों को नवीन माना जा रहा है, उनका दार्शनिक आधार भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा में सहस्राब्दियों पूर्व से विद्यमान रहा है।

4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में गुरु की महिमा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अध्याय 5 का शीर्षक ही है - **शिक्षक**, यह इस तथ्य का संकेत है कि सम्पूर्ण शिक्षा-व्यवस्था का केन्द्र शिक्षक है। नीति के अनुसार शिक्षक चरित्र निर्माता एवं राष्ट्रनिर्माता है, उसका सम्मान आवश्यक है। शिक्षा का उद्देश्य समग्र विकास है अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा के अधोलिखित उद्देश्य बताए गए हैं -

- बौद्धिक विकास
- नैतिक विकास
- भावनात्मक विकास
- सामाजिक उत्तरदायित्व
- सृजनात्मकता
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण
- भारतीय संस्कृति से जुड़ाव

भारतीय परम्परा में यही आदर्श निम्न शान्तिमन्त्र में अभिव्यक्त हुआ है—

सह नावतु।

सह नौ भुनक्तु।

सह वीर्यं करवावहे।

तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहे॥ (तैत्तिरीयोपनिषद्, ब्रह्मानन्दवल्ली, शान्तिपाठ)

यह मन्त्र शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य सहयोगात्मक शिक्षा (Collaborative Learning) का सर्वोत्तम उदाहरण है। यहाँ प्रतिस्पर्धा नहीं, सहअध्ययन एवं अधिकार नहीं, सहभागिता मूल में रही है।

5. भारतीय ज्ञानपरम्परा एवं NEP-2020 : एक तुलनात्मक विश्लेषण

भारतीय ज्ञानपरम्परा	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020
गुरु जीवन-निर्माता	Teacher as Nation Builder
शिक्षा = आत्मविकास	Holistic Development
स्वाध्याय	Lifelong Learning

संवाद	Inquiry-based Learning
गुरुकुल	Student-centric Learning
चरित्र निर्माण	Value-based Education
आचार्यदेवो भव	Teacher Dignity
लोकसंग्रह	Responsible Citizenship
योग एवं आत्मसंयम	Wellness and Well-being
समग्र व्यक्तित्व	Multidisciplinary Education

यह तुलनात्मक अध्ययन स्पष्ट करता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 किसी बाह्य शिक्षा-दर्शन का अनुकरण नहीं करती, बल्कि भारतीय ज्ञानपरम्परा के मूल सिद्धान्तों को आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्संरचित करती है।

6. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 : भारतीय गुरु-परम्परा का समकालीन पुनर्पाठ : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय शिक्षा-दर्शन को केवल प्रशासनिक सुधार तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे भारतीय सांस्कृतिक चेतना से जोड़ती है। नीति के प्रारम्भिक भाग में ही यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि **सदाचारी, संवेदनशील, सृजनशील, तार्किक एवं उत्तरदायी नागरिक** का निर्माण करना है। यह उद्देश्य भारतीय शिक्षा-दर्शन के उस मूल सिद्धान्त का आधुनिक रूप है जिसमें शिक्षा को *"सा विद्या या विमुक्तये"* के आदर्श से जोड़ा गया है।

नीति का अध्याय-4 (Curricular and Pedagogical Structure) अनुभवात्मक अधिगम, कला-एकीकृत शिक्षा, नैतिक शिक्षा, संवादात्मक शिक्षण तथा समग्र विकास पर बल देता है। यह दृष्टि उपनिषदों की संवाद-परम्परा तथा गुरुकुलीय शिक्षण-पद्धति से साम्य रखती है।

अध्याय-5 (Teachers) में शिक्षक को शिक्षा-सुधार का केन्द्रबिन्दु घोषित किया गया है। नीति में स्पष्ट कहा गया है कि शिक्षक की सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यावसायिक स्वायत्तता, निरन्तर प्रशिक्षण तथा प्रेरक कार्य-परिवेश के बिना शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन सम्भव नहीं है। यह दृष्टिकोण भारतीय परम्परा के **"आचार्यदेवो भव"** के सांस्कृतिक आदर्श का समकालीन रूप है।

इसी प्रकार नीति भारतीय ज्ञान-प्रणाली (Indian Knowledge Systems), भारतीय भाषाओं, योग, आयुर्वेद, दर्शन, गणित, खगोल, साहित्य एवं शास्त्रीय परम्पराओं को शिक्षा में समाहित करने पर बल देती है। इससे स्पष्ट है कि NEP-2020 भारतीय ज्ञान-परम्परा को आधुनिक शिक्षा के साथ समन्वित करने का प्रयास करती है।

7. समकालीन शिक्षा में विद्यमान विसंगतियों के निराकरण में भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा की प्रासंगिकता : यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय शिक्षा को नई दिशा प्रदान करती है, तथापि इसके प्रभावी क्रियान्वयन के समक्ष अनेक चुनौतियाँ भी हैं :

- वर्तमान समय प्रचलित शिक्षा के बाजारीकरण का भारतीय परम्परा समर्थन नहीं करती। गुरु का कार्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का निर्माण करना है।
- डिजिटल युग में गुरु की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। शिक्षक अब केवल "Information Provider" नहीं, बल्कि "Learning Facilitator", "Mentor" तथा "Value Educator" है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 सत्यनिष्ठा, करुणा, संवेदनशीलता, संविधानिक मूल्यों तथा उत्तरदायी नागरिकता के विकास पर बल देती है।

- भारतीय परम्परा में गुरु स्वयं आजीवन विद्यार्थी माना गया है। **स्वाध्याय** को शिक्षा का अनिवार्य अंग माना गया है। NEP-2020 का **Continuous Professional Development (CPD)** इसी सिद्धान्त का आधुनिक शैक्षिक रूप है।

8. गुरु-तत्त्व : भारतीय संस्कृति की स्थायी धरोहर : भारतीय संस्कृति में गुरु केवल व्यक्ति नहीं, बल्कि एक दार्शनिक सिद्धान्त (Philosophical Principle) है। गुरु ज्ञान का माध्यम, संस्कृति का संवाहक, नैतिकता का संरक्षक तथा समाज के बौद्धिक नेतृत्व का प्रतीक है।

9. निष्कर्ष : भारतीय संस्कृति में गुरु-तत्त्व केवल धार्मिक या पारम्परिक अवधारणा नहीं, बल्कि शिक्षा-दर्शन का मूलधार है। वैदिक साहित्य, उपनिषद्, भगवद्गीता, महाभारत तथा स्मृति-साहित्य में गुरु को ज्ञान, संस्कार, आत्मानुशासन तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्माता माना गया है। गुरु की भूमिका व्यक्ति के बौद्धिक विकास तक सीमित न होकर उसके नैतिक, आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक विकास तक विस्तृत है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 इसी भारतीय दृष्टि को समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्परिभाषित करती है। शिक्षक को शिक्षा-सुधार का केन्द्र, राष्ट्र-निर्माता, मूल्य-संवाहक तथा नवाचार के प्रेरक के रूप में स्थापित किया गया।

अतः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय संस्कृति से प्रेरित एक ऐसी शिक्षा-दृष्टि प्रस्तुत करती है जिसमें गुरु पुनः शिक्षा-व्यवस्था के केन्द्र में प्रतिष्ठित होता है। यदि नीति का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए तथा शिक्षक को आवश्यक सम्मान, संसाधन और स्वायत्तता प्रदान की जाए, तो भारतीय शिक्षा पुनः ज्ञान, संस्कार एवं नवाचार के वैश्विक केन्द्र के रूप में स्थापित हो सकती है। इस प्रकार गुरु-तत्त्व केवल अतीत की सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य के भारत के निर्माण की आधारशिला भी है।

9. संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. पोद्दार, ह. कृ. (संपा.). (2014). *श्रीमद्भगवद्गीता (कोड 2, संस्कृत-हिन्दी सं.)*. गीता प्रेस।
2. राधाकृष्णन, स. (अनु. एवं संपा.). (1953). *द प्रिंसिपल्स उपनिषद्स [कठोपनिषद् मूल पाठ और अनुवाद सहित]*. जॉर्ज एलेन एंड अनविन।
3. सुक्थणकर, वि. स., बेलवलकर, स. क., एवं वैद्य, प. ल. (संपा.). (1933-1966). *द महाभारत: फॉर द फर्स्ट टाइम क्रिटिकली एडिटेड (भाग 1-19)*. भण्डारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट।
4. ओलिवेल, पी. (संपा. एवं अनु.). (2005). *मनुज कोड ऑफ लॉ: ए क्रिटिकल एडिशन एंड ट्रांसलेशन ऑफ द मानव-धर्मशास्त्र*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. राधाकृष्णन, स. (2008). *भारतीय दर्शन (भाग 1-2, दूसरा सं.)*. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। (मूल कार्य 1923 में प्रकाशित)
6. कपूर, क., एवं डैनियो, मि. (संपा.). (2012). *इंडियन नॉलेज सिस्टम्स (भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ, भाग 1-2)*. डी.के. प्रिंटवर्ल्ड।
7. डैनियो, मि. (2022). *द इंडियन नॉलेज सिस्टम: एन ओवरव्यू*. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गांधीनगर।
8. Sāyāṇa. (1933-1951). *Rigveda-Samhita: With the commentary of Sayanacharya* (N. S. Sontakke & C. G. Kashikar, Eds.; Vol. 1-5). Vaidika Samshodhana Mandala.
9. Satvalekar, S. D. (Ed.). (1957). *Atharvaveda Samhita*. Swadhyaya Mandal.
10. Śaṅkarācārya. (1980). *The Taittirīya Upaniṣad: With the commentary of Śaṅkarācārya* (S. Sitarama Sastri, Trans.). Sri Ramakrishna Math.
11. Gambhirananda, S. (Trans.). (1957). *Mundaka Upanishad: With the commentary of Sankaracarya*. Advaita Ashrama.
12. शिक्षा मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, education.gov.in